



INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

माध्यमिक स्तर के आदिवासी विद्यार्थियों के संवेगात्मक बुद्धि के संदर्भ में शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन

रंजीत कुमार सिंह

शोधार्थी

शिक्षा संकाय

आई0आई0एम0टी0, विश्वविद्यालय
गंगा नगर, मवाना रोड, मेरठ (उ0प्र0)

डॉ0 सरिता गोस्वामी

प्रोफेसर एवं संकायाध्यक्षा

शिक्षा संकाय

आई0आई0एम0टी0, विश्वविद्यालय
गंगा नगर, मवाना रोड, मेरठ (उ0प्र0)

सारांश

वर्तमान शोध पत्र में माध्यमिक विद्यालय के आदिवासी छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि के संबंध में उनके संवेगात्मक बुद्धि का पता लगाया गया है। छात्रों के संवेगात्मक बुद्धि का मूल्यांकन डॉ0 अरुण कुमार सिंह एवं डॉ0 श्रुति नारायण द्वारा निर्मित "संवेगात्मक बुद्धि मापनी" द्वारा किया गया था। इस मापनी का निर्माण चार विमाओं को लेकर किया गया है, जो है— 1. संवेगात्मक अंतर्बोध 2. अभिप्रेरण अंतर्बोध 3. समानुभूति 4. संबंध प्रबंधन। विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि का मूल्यांकन मानकीकृत उपलब्धि परीक्षणों द्वारा किया गया। निष्कर्षों से संकेत मिलता है कि माध्यमिक विद्यालय के आदिवासी छात्रों के संवेगात्मक बुद्धि और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण संबंध मौजूद है। अध्ययन के नतीजों को सामान्य बनाने के लिए अधिक विस्तृत अध्ययन की आवश्यकता है।

मूल शब्द— संवेगात्मक बुद्धि, शैक्षणिक उपलब्धि, माध्यमिक विद्यालय के छात्र, आदिवासी छात्र।

1. परिचय

सामान्यतः यह समझा जाता है कि व्यक्ति की सफलता एवं उपलब्धियाँ उसकी बुद्धि लब्धि पर आधारित होता है। जिसकी बुद्धिलब्धि अधिक होती है, समन्यता उसके जीवन में उपलब्धि भी अधिक होती है, परन्तु आधुनिक शोधों से यह स्पष्ट हो गया है कि व्यक्ति को अपनी जीवन में जो भी सफलता प्राप्त होती है, उसका मात्र 20 प्रतिशत उसकी बुद्धिलब्धि के कारण होती है और 80 प्रतिशत उसकी संवेगात्मक बुद्धि के कारण होती है। दो अमेरिकन मनोवैज्ञानिक "सैलोभी एवं मेयर" 1990 ने सांवेगिक बुद्धि पद का प्रतिपादन किया परन्तु इसकी वैज्ञानिक एवं सैद्धान्तिक व्याख्या गोलमैन 1998 द्वारा की गयी है। गोलमैन 1994 के अनुसार— संवेगात्मक बुद्धि को परिभाषित करते हुए यह कहा है कि यह दूसरो एवं स्वयं के भावों को पहचानने की क्षमता तथा अपने आप को अभिप्रेरित करने एवं अपने तथा अपने सम्बंधों में संवेग को प्रबंधित करने की क्षमता है। "गोलमैन 1998 ने संवेगात्मक क्षमताओं के चारो समुहों का वर्णन किया है— (1) आत्म— अवगतता (2) आत्म—प्रबंधन (3) सामाजिक चेतना एवं (4) सामाजिक कौशल

संवेगात्मक बुद्धि तनाव को दूर करने, प्रभावी ढंग से संवाद करने, दूसरों के साथ सहानुभूति रखने, चुनौतियों पर काबू पाने और संघर्ष को शांत करने के लिए सकारात्मक तरीके से अपनी भावनाओं को समझने, उपयोग करने और प्रबंधित करने की क्षमता है। संवेगात्मक बुद्धि व्यक्ति मजबूत संबंध बनाने, स्कूल और काम में सफल होने और अपने करियर और व्यक्ति को लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद करती है। यह व्यक्ति को भावनाओं से जुड़ने योजनाओं को कार्यान्वयन में परिवर्तित करने और अपने लिए सबसे महत्वपूर्ण निर्णय लेने में भी मदद करता है। संवेगात्मक बुद्धि को आमतौर पर चार विशेषताओं द्वारा परिभाषित किया जाता है:

स्व—प्रबंधन — व्यक्ति अपने, आवेगी भावनाओं और व्यवहारों को नियंत्रित करने, अपनी भावनाओं को स्वस्थ तरीके से प्रबंधित करने, पहल करने, प्रतिबद्धताओं का पालन करने और बदलती परिस्थितियों के अनुकूल होने में सक्षम हैं।

आत्म-जागरूकता – व्यक्ति अपनी भावनाओं और विचारों को पहचानते हैं और वे अपने विचारों और व्यवहार को कैसे प्रभावित करते हैं को जानते और समझते हैं। वे अपनी ताकत और कमजोरियों को जानते हैं, और अपने में आत्मविश्वास करते हैं।

सामाजिक जागरूकता – व्यक्ति के पास सहानुभूति है। वे अन्य लोगों की भावनाओं, जरूरतों और चिंताओं को समझ सकते हैं, भावनात्मक संकेतों को समझ सकते हैं, सामाजिक रूप से सहज महसूस कर सकते हैं और किसी समूह या संगठन में शक्ति की गतिशीलता को पहचान सकते हैं।

संबंध प्रबंधन – व्यक्ति अच्छे संबंधों को विकसित करना और बनाए रखना जानते हैं, स्पष्ट रूप से संवाद करते हैं, दूसरों को प्रेरित करते हैं और प्रभावित करते हैं, एक समूह में अच्छी तरह से काम करते हैं और संघर्ष का प्रबंधन करते हैं।

संवेगात्मक बुद्धि महत्वपूर्ण है, जैसा कि हम जानते हैं कि, जो जीवन में सबसे सफल या सबसे पूर्ण हैं। वह सबसे चतुर लोग नहीं हैं जो जीवन में सबसे सफल या सबसे पूर्ण हैं। हम ऐसे लोगों को जानते हैं जो अकादमिक रूप से प्रतिभाशाली हैं और फिर भी सामाजिक रूप से अयोग्य और काम पर या अपने व्यक्तिगत संबंधों में असफल हैं। जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए बौद्धिक क्षमता या बुद्धि लब्धि अपने आप में पर्याप्त नहीं है। व्यक्ति की प्फण व्यक्ति को कॉलेज में आने में मदद कर सकती है, लेकिन यह व्यक्ति का म्फण है जो उसकी अंतिम परीक्षा का सामना करते समय तनाव और भावनाओं को प्रबंधित करने में उसकी मदद करेगी। उच्च संवेगात्मक बुद्धि व्यक्ति को कार्यस्थल की सामाजिक जटिलताओं को सुलझाने, नेतृत्व करने और दूसरों को प्रेरित करने और अपने जीवन में उत्कृष्टता प्राप्त करने में मदद कर सकती है। वास्तव में, जब महत्वपूर्ण नौकरी के उम्मीदवारों का आकलन करने की बात आती है, तो कई कंपनियां अब संवेगात्मक बुद्धि को तकनीकी क्षमता के रूप में महत्वपूर्ण मानती हैं और काम पर रखने से पहले म्फण परीक्षण को नियोजित करती हैं।

अपनी भावनाओं को परिस्थिति के अनुसार नियंत्रित व निर्देशित कर, पारस्परिक संबंधों का विवेकानुसार और सामंजस्यपूर्ण तरीके से प्रबंधन करने की क्षमता भावनात्मक बुद्धिमत्ता कहलाती है। यह मूल रूप से अपनी भावनाओं को पहचानने और प्रबंधित करने तथा दूसरे के मनोभावों को समझकर उन पर नियंत्रण करने की क्षमता है। बौद्धिक गुणक कई अलग-अलग मानकीकृत परीक्षणों से प्राप्त एक गणना है जिससे बुद्धि का आकलन किया जाता है। भावनात्मक बुद्धिमत्ता और बौद्धिक गुणक की तुलना-

एक अच्छी बौद्धिक गुणक वाला व्यक्ति अच्छी सफलता प्राप्त कर सकता है लेकिन तरक्की पाने के लिए भावनात्मक समझ का होना भी जरूरी है। अच्छी भावनात्मक समझ रखने वाला व्यक्ति कभी भी क्रोध और खुशी के अतिरेक में आकर अनुचित कदम नहीं उठाता है।

बौद्धिक गुणक व्यक्ति को सिर्फ परीक्षा में अच्छे अंक दिलाता है, लेकिन भावनात्मक बुद्धिमत्ता व्यक्ति को जीवन की परीक्षा में सफलता दिलाती है। जिनकी भावनात्मक बुद्धिमत्ता ज्यादा होती है, वे बदलते पर्यावरण के साथ जल्दी व्यवस्थित हो जाते हैं और इसलिये उनकी सफलता की संभावनाएं बढ़ जाती हैं।

भावनात्मक बुद्धिमत्ता वाले लोग सिर्फ तथ्य नहीं देखते बल्कि उसके साथ भावनाओं से भी काम लेते हैं। उन्हें यह पता होता है कि हर कोई अलग है इसलिये उस अंतर को ध्यान में रखते हुए वे सबसे एक सा व्यवहार नहीं करते। वे अपनी भावनाओं के साथ-साथ दूसरों की भावनाओं का भी कद्र करते हैं। ऐसे लोग संचार-कौशल में अच्छे होते हैं और अच्छे अधिकारी बन सकते हैं। भावनात्मक बुद्धिमत्ता और बौद्धिक गुणक के बारे में सबसे पहले गोलमेन ने बताया था। उनका कहना था कि जीवन में 20 प्रतिशत सफलता बौद्धिक गुणक से मिलती है, जबकि 80 प्रतिशत सफलता भावनात्मक बुद्धिमत्ता के कारण मिलती है।

प्रशासन में भावनात्मक बुद्धिमत्ता की आवश्यकता

भावनात्मक बुद्धिमत्ता वाले व्यक्ति दूसरों की भावनाओं को सुनकर उन लोगों के साथ सहानुभूति व्यक्त करते हैं। अपनी गलतियों को स्वीकार करते हैं और उनसे सीख लेते हैं। नए विचारों और जानकारी के साथ सहज समायोजित हो जाते हैं। असहमति को आसानी से हल करते हैं। दूसरों की तुलना में अधिक उत्पादक होते हैं। संवेगात्मक बुद्धि व्यक्ति की भावनाओं के अनुरूप होना एक सामाजिक उद्देश्य की पूर्ति करता है, जो व्यक्ति को अन्य लोगों और उसके आस-पास की दुनिया से जोड़ता है। संवेगात्मक बुद्धि व्यक्ति को शत्रु और मित्र को पहचानने, किसी अन्य व्यक्ति की रुचि को मापने, तनाव कम करने, सामाजिक संचार के माध्यम से अपने तंत्रिका तंत्र को संतुलित करने और प्यार और खुश महसूस करने में सक्षम बनाती है। प्रस्तुत शोध में माध्यमिक स्तर के आदिवासी विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर संवेगात्मक बुद्धि के प्रभाव का अध्ययन करना है।

2. शोध साहित्य

अब्दुल्लाह मारिया चोंग एट ऑल (2004) ने अपने शोध के दौरान यह पाया कि सांवेगिक बुद्धि एवं स्कूली क्रियाओं के प्रति नाकारात्मक के दरम्यान रेखीय नकारात्मक सम्बन्ध है। उन्होंने अपने अध्ययन "इमोशनल एटेलिजेन्स एवं एकेडमिक अचीवमेंट अर्मांग मलेशियन सकेंडरी स्टूडेन्ट्स," में यह भी पाया कि शैक्षणिक उपलब्धि एवं सांवेगिक बुद्धि में एक रेखीय सम्बन्ध है।

जोशी (2010) ने वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों में पढ़ाने वाले शिक्षकों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता और नौकरी की संतुष्टि का अध्ययन किया और शिक्षकों की बुद्धि और नौकरी की संतुष्टि के बीच महत्वपूर्ण सकारात्मक सहसंबंध की सूचना दी।

फकोरिहाजियार एट ऑल (2014) ने बताया कि भावनात्मक बुद्धिमत्ता (EQ) तनाव को दूर करने, प्रभावी ढंग से संवाद करने, दूसरों के साथ सहानुभूति रखने, चुनौतियों पर काबू पाने और संघर्ष को शांत करने के लिए सकारात्मक तरीकों से भावनाओं को पहचानने, उपयोग करने, समझने और प्रबंधित करने की क्षमता है। भावनात्मक बुद्धिमत्ता हमारे दैनिक जीवन के कई अलग-अलग पहलुओं को प्रभावित करती है, जैसे कि जिस तरह से कोई व्यवहार करता है और जिस तरह से वह दूसरों के साथ बातचीत करता है। इसलिए, शोधकर्ता ने विश्वविद्यालय के छात्रों में उपलब्धि प्रेरणा के साथ भावनात्मक बुद्धि और मानसिक स्वास्थ्य के संबंध की जांच की। अध्ययन में, नमूने में 382 विश्वविद्यालय के छात्र शामिल थे। प्रतिभागियों ने शुट्टे सेल्फ रिपोर्ट इमोशनल इंटेलिजेन्स टेस्ट (SSREIT), गोल्डबर्ग जनरल हेल्थ प्रश्नावली (GHQ) और कामकर और बाहरी उपलब्धि प्रेरणा पैमाने के मान्य उपायों को पूरा किया। निष्कर्षों ने उपलब्धि प्रेरणा के साथ भावनात्मक बुद्धिमत्ता के बीच सकारात्मक महत्वपूर्ण सहसंबंध का खुलासा किया। यद्यपि, उपलब्धि अभिप्रेरणा के साथ मानसिक स्वास्थ्य के बीच संबंध है, लेकिन सहसंबंध महत्वपूर्ण नहीं था। यह निष्कर्ष निकाला कि भावनात्मक बुद्धि की वृद्धि उपलब्धि प्रेरणा को बढ़ाती है। वर्तमान शोध के निष्कर्ष छात्र परामर्श, किशोर और युवा परामर्श, और व्यक्तित्व विकास के क्षेत्र में महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक प्रभाव डाल सकते हैं। भावनात्मक बुद्धिमत्ता के संबंध में छात्रों और युवाओं की मदद करने से उनकी भावनात्मक क्षमता में सुधार हो सकता है, मानसिक बीमारी कम हो सकती है और उनके जीवन की गुणवत्ता और शैक्षणिक उपलब्धि में सुधार हो सकता है।

लैसियानो और कर्सी (2014) ने स्नातक छात्रों में शैक्षणिक उपलब्धि की भविष्यवाणी करने, संज्ञानात्मक क्षमताओं और व्यक्तित्व लक्षणों को नियंत्रित करने में भावनात्मक बुद्धिमत्ता (ईआई) की क्षमता माप की वृद्धिशील वैधता का परीक्षण किया। प्रत्येक परीक्षा की तैयारी के लिए परीक्षाओं की संख्या, ग्रेड बिंदु औसत और अध्ययन में लगने वाले समय के संदर्भ में शैक्षणिक उपलब्धि की अवधारणा की गई है। इसके अतिरिक्त, इन संबंधों में लिंग भेद को ध्यान में रखा गया। प्रतिभागियों ने प्रश्नावली, मेयर-सलोवी-कारुसो इमोशनल इंटेलिजेन्स टेस्ट (MSCEIT), रेवेन्स एडवांस्ड प्रोग्रेसिव मैट्रिसेस, ईसेनक पर्सनैलिटी प्रश्नावली के कम संस्करण और शैक्षणिक उपलब्धि उपायों को भरा। परिणामों से पता चला कि EI योग्यताएँ अकादमिक उपलब्धि सूचकांकों से सकारात्मक रूप से संबंधित थीं, जैसे कि परीक्षाओं की संख्या और ग्रेड बिंदु औसत कुल EI क्षमता और समझने वाली शाखा परीक्षा की तैयारी में बिताए गए अध्ययन के समय के साथ नकारात्मक रूप से जुड़ी हुई थी। इसके अलावा, ईआई क्षमता शैक्षिक सफलता की व्याख्या करने में संज्ञानात्मक क्षमता और व्यक्तित्व चर के संबंध में वृद्धिशील भिन्नता का प्रतिशत जोड़ती है। ईआई क्षमताओं और शैक्षणिक उपलब्धि उपायों के बीच संबंध का परिमाण आम तौर पर महिलाओं की तुलना में पुरुषों के लिए अधिक था। संयुक्त रूप से विचार किया गया, वर्तमान निष्कर्ष MSCEIT की वृद्धिशील वैधता का समर्थन करते हैं और छात्रों के शैक्षणिक विकास में ईआई के महत्व के सकारात्मक संकेत प्रदान करते हैं। शैक्षणिक संस्थानों के संदर्भ में ईआई प्रशिक्षण की उपयोगिता पर प्रकाश डाला गया है।

जोशी और थपलियाल (2014) ने दिल्ली की विशिष्ट भौगोलिक स्थिति के माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता और नौकरी की संतुष्टि के बीच संबंध का पता लगाने के लिए अध्ययन किया। प्रस्तुत पेपर में माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता और कार्य संतुष्टि पर लिंग के प्रभाव का भी पता लगाया गया है। अध्ययन के नतीजे ने माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता और नौकरी की संतुष्टि के बीच सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण सकारात्मक संबंध का संकेत दिया। अध्ययन ने आगे संकेत दिया कि इन शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का स्तर औसत से ऊपर है और उनकी भावनात्मक बुद्धिमत्ता का स्तर अच्छी डिग्री का है। अध्ययन से यह भी पता चला कि लिंग का अध्ययन के तहत शिक्षकों की नौकरी की संतुष्टि और भावनात्मक बुद्धिमत्ता पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

जिरक और अहमदियान (2015) ने अकादमिक उपलब्धि के साथ भावनात्मक बुद्धिमत्ता और रचनात्मक सोच के बीच संबंधों का पता लगाने के लिए एक अध्ययन किया। वर्णनात्मक-सहसंबंध अध्ययन तोरबत-ए-हेदरीह के 156 पुरुष और महिला छात्रों पर किया गया था, जिन्हें 2012 के दौरान जनगणना पद्धति द्वारा चुना गया था। ब्रेडबेरी – ग्रीव्स की भावनात्मक बुद्धिमत्ता की प्रश्नावली और अबेदी की रचनात्मक सोच की प्रश्नावली का उपयोग करके डेटा एकत्र किया गया था। विद्यार्थियों के माध्य प्राप्तकों का प्रयोग शैक्षिक उपलब्धि के सूचकांक के रूप में किया गया। डेटा का विश्लेषण वर्णनात्मक आंकड़ों, स्वतंत्र टी परीक्षण, पियर्सन सहसंबंध गुणांक और SPSS 20 सॉफ्टवेयर का उपयोग करके कई प्रतिगमन द्वारा किया गया था। भावनात्मक बुद्धिमत्ता और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच कोई महत्वपूर्ण संबंध नहीं है, लेकिन रचनात्मक सोच और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच संबंध सकारात्मक और महत्वपूर्ण था। भावनात्मक बुद्धिमत्ता और रचनात्मक सोच के घटकों में, सामाजिक जागरूकता और प्रवाह के बीच शैक्षणिक उपलब्धि के बीच महत्वपूर्ण संबंध था। पुरुष और महिला छात्रों के भावनात्मक बुद्धिमत्ता और रचनात्मक सोच स्कोर के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं था।

जेनाबादी और अन्य (2015) का उद्देश्य निकशहर में हाई स्कूल की दूसरी अवधि के छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि के साथ भावनात्मक बुद्धिमत्ता और रचनात्मकता के संबंध की जांच करना है। यह एक वर्णनात्मक-सहसंबंधपरक अध्ययन था। अध्ययन की जनसंख्या में 2013-2014 के शैक्षणिक वर्ष में सभी दूसरी अवधि के हाई स्कूल के छात्र शामिल थे। सांख्यिकीय न्यादर्श का चयन सरल यादृच्छिक प्रतिचयन विधि द्वारा किया गया था। डेटा एकत्र करने के लिए, मेयर सलोवी कारुसो इमोशनल इंटेलिजेंस टेस्ट (1995) के साथ-साथ रचनात्मकता प्रश्नावली (सुल्तानी) और छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धियों की तुलना करने के लिए, 2013-2014 के शैक्षणिक वर्ष में उनके ळच। का उपयोग किया गया था। प्राप्त डेटा का विश्लेषण वर्णनात्मक (आवृत्ति तालिका, आवृत्ति, और चार्ट) और अनुमानात्मक सांख्यिकी (स्वतंत्र टी-परीक्षण और पियर्सन सहसंबंध गुणांक) दोनों का उपयोग करके किया गया था। परिणामों ने संकेत दिया कि भावनात्मक बुद्धि और शैक्षणिक उपलब्धि महत्वपूर्ण रूप से सहसंबद्ध थी। इसके अलावा, रचनात्मकता और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच एक महत्वपूर्ण और सकारात्मक संबंध था। इसके अतिरिक्त, उनकी शैक्षणिक उपलब्धि को देखते हुए पुरुषों और महिलाओं के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं पाया गया।

अफीफी और अन्य (2016) ने समझाया कि भावनात्मक बुद्धिमत्ता ने हाल ही में शोधकर्ताओं का ध्यान आकर्षित किया है। इसमें सहानुभूति, आत्म-जागरूकता, प्रेरणा और आत्म-नियंत्रण के मानवीय कौशल शामिल हैं। शैक्षणिक प्रदर्शन के साथ भावनात्मक बुद्धिमत्ता (EI) का संबंध विवादास्पद है। भावनात्मक बुद्धिमत्ता (EI) जीवन की संतुष्टि और मानसिक स्वास्थ्य के भविष्यवक्ता के रूप में, भावनाओं का आकलन, विनियमन और उपयोग करने की क्षमता है और अकादमिक प्रदर्शन सहित अकादमिक आत्म-प्रभावकारिता और विभिन्न प्रकार के बेहतर परिणामों से जुड़ा हुआ पाया गया है। EI को अकादमिक प्रदर्शन सहित विभिन्न परिणामों से संबद्ध पाया गया है। कुछ अध्ययनों ने विश्वविद्यालय के छात्रों के बीच अकादमिक आत्म-प्रभावकारिता और अकादमिक उपलब्धि के बीच संबंध पर ईआई के मध्यम प्रभाव की जांच की है। दूसरों ने छात्रों की आत्म-प्रभावकारिता और कार्य प्रदर्शन के स्तर पर EI के विकास का पता लगाया है। अध्ययन का उद्देश्य विश्वविद्यालय के छात्रों के बीच भावनात्मक बुद्धिमत्ता, आत्म-प्रभावकारिता (SE) और छात्र के शैक्षणिक प्रदर्शन के बीच संबंधों का पता लगाना था। अध्ययन में शैक्षणिक वर्ष 2015-2016 के दौरान काहिरा विश्वविद्यालय के मीडिया और जनसंचार महाविद्यालयों के 152 नर्सिंग छात्रों और 194 विषयों को शामिल किया गया था। शैक्षणिक वर्ष 2015-16 के दूसरे सेमेस्टर के दौरान छात्रों के GPA के अलावा, दो उपकरण इमोशनल इंटेलिजेंस प्रश्नावली- शॉर्ट फॉर्म (TEIQue-SF) और सामान्य स्व-प्रभावकारिता स्केल (GSE) का उपयोग डेटा एकत्र करने के लिए किया गया था। महिला विश्वविद्यालय के छात्रों ने पुरुषों की तुलना में उच्च GPA और EI स्कोर दिखाया। EI का माध्य नर्सिंग छात्रों की तुलना में गैर-चिकित्सा छात्रों में काफी अधिक था। SE में कोई लिंग अंतर नहीं था। EI का माध्य स्कोर GPA के शीर्ष 10वें प्रतिशतक के साथ समूह में अधिक था।

गार्सिया-मार्टिनेज और अन्य (2021) ने बताया कि भावनात्मक बुद्धिमत्ता (EI) और तनाव ऐसी रचनाएँ हैं जो अक्सर शिक्षण पेशे की विशेषता होती हैं और विपरीत रूप से संबंधित होती हैं। साहित्य में ऐसे सबूत हैं जो EI पर काम करने वाले शिक्षकों के महत्व का सुझाव देते हैं ताकि वे मुकाबला करने की रणनीतियों को सीख सकें और उनके शिक्षण प्रथाओं में सुधार कर सकें। इस वर्णनात्मक और सहसंबंधी अध्ययन का उद्देश्य भविष्य के शिक्षकों के सामाजिक-भावनात्मक प्रोफाइल की उनके EI और शैक्षणिक तनाव स्तरों के आधार पर जांच करना था ताकि भविष्य की तनावपूर्ण स्थितियों के लिए मार्गदर्शन प्रदान किया जा सके जो उनके भविष्य के व्यावसायिक विकास को प्रभावित करेगा। इस उद्देश्य के लिए, अंडालूसी विश्वविद्यालयों (स्पेन) में शिक्षा की डिग्री में नामांकित एक विश्वविद्यालय की आबादी में सुविधा के लिए यादृच्छिक नमूनाकरण, 1020 पूर्व-सेवा शिक्षकों के नमूने का उपयोग किया गया था। परिणामों ने ईआई में श्रेष्ठता, अकादमिक तनाव और पुरुषों की तुलना में महिलाओं के पक्ष में अकादमिक उपलब्धि की ओर इशारा किया। EI, अकादमिक तनाव और छात्र शिक्षकों की उपलब्धि के बीच संबंध का प्रदर्शन किया गया। इसके अलावा, EI के कुछ घटकों को छात्र की उपलब्धि में सुधार और शैक्षणिक तनाव को कम करने के लिए महत्वपूर्ण कारकों के रूप में तैनात किया गया था। एक बार अकादमिक उपलब्धि पर इन निर्माणों की उच्च घटनाओं की पुष्टि हो जाने के बाद, शैक्षिक सफलता और उनके बाद

के व्यावसायिक विकास में सुधार के उद्देश्य से EI और मुकाबला और तनाव कौशल प्रशिक्षण कार्यक्रम विकसित करने के महत्व का प्रदर्शन किया गया।

चांग और त्साई (2022) ने अपने शोध के माध्यम से बताया कि छात्रों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता उनकी शैक्षणिक उपलब्धि को सीधे प्रभावित नहीं करती है। हालाँकि, यह सीधे और सकारात्मक रूप से उनकी सीखने की प्रेरणा और आत्म-प्रभावकारिता को प्रभावित करता है। जिन छात्रों के पास उच्च भावनात्मक बुद्धिमत्ता होती है, उनमें सीखने की प्रेरणा अधिक होती है और वे ऑनलाइन पाठ्यक्रमों के दौरान दूसरों की भावनाओं को महसूस कर सकते हैं, जो उनकी आत्म-प्रभावकारिता को प्रभावित करता है और परोक्ष रूप से उनकी शैक्षणिक उपलब्धि को प्रभावित करता है। परिणामस्वरूप, उनके लिए अपनी भावनात्मक बुद्धिमत्ता को ठीक से प्रबंधित और विकसित करना अभी भी महत्वपूर्ण है।

3. शोध समस्या का विवरण

प्रस्तुत शोध में माध्यमिक स्तर के आदिवासी विद्यार्थियों के भावनात्मक बुद्धि तथा शैक्षिक उपलब्धि के बीच सह-सम्बन्ध का अध्ययन करना है।

4. शोध अंतराल

मानसिक स्वास्थ्य का माध्यमिक स्तर के बालक-बालिकाओं की शैक्षणिक उपलब्धता की प्राप्ति विषयक शोध बहुत कम हुए हैं। शोध की साहित्य समीक्षा से यह बात प्रदर्शित होती है कि भावनात्मक बुद्धि एवं शैक्षिक उपलब्धि के सहसंबंध को स्थापित करने वाले शोध भी लगभग नगण्य हैं। पूर्व में किए गए शोधों के भौगोलिक क्षेत्र भी वर्तमान में प्रस्तावित शोध-क्षेत्र से काफी अलग रहे हैं। प्रस्तुत शोध इन अंतरालों को पूरा करने का एक प्रयास है।

5. उद्देश्य

माध्यमिक स्तर के आदिवासी विद्यार्थियों के भावनात्मक बुद्धि तथा शैक्षिक उपलब्धि के बीच सह-सम्बन्ध का अध्ययन।

6. परिकल्पना

माध्यमिक स्तर के आदिवासी विद्यार्थियों के भावनात्मक बुद्धिमत्ता तथा शैक्षिक उपलब्धि के बीच सार्थक सम्बन्ध नहीं है।

7. शोध का सीमाएँ

वर्तमान अध्ययन के परिसीमन निम्नलिखित हैं—

- वर्तमान अध्ययन में दसवीं कक्षा के छात्रों तक सीमित है।
- अध्ययन को मुख्य चर जैसे भावनात्मक बुद्धि, और शैक्षिक उपलब्धि तक सीमित किया गया है।
- अध्ययन गुमला जिले के सरकारी स्कूलों के 250 छात्रों तक सीमित किया गया है।
- यह अध्ययन झारखण्ड के गुमला जिले के सरकारी विद्यालयों तक ही सीमित है।

8. शोध विधि

वर्तमान अध्ययन में वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया।

9. प्रतिदर्श

अध्ययन का प्रतिदर्श यादृच्छिक प्रतिचयन विधि द्वारा झारखंड राज्य के जिला गुमला में स्थित सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के 10 वीं कक्षा से चुना गया। प्रतिदर्श में इकाइयों की प्रस्तावित संख्या 250 आदिवासी छात्र थी।

10. शोध अभिकल्प

शोध में प्रयुक्त चर :

स्वतंत्र चर – भावनात्मक बुद्धि।

आश्रित चर – शैक्षिक उपलब्धि।

11. ऑकड़ा संग्रह के लिए उपकरण

(i) सिंह एव नारायण "संवेगात्मक बुद्धि मापनी":—

प्रस्तुत शोध अध्ययन में विद्यार्थियों के संवेगात्मक बुद्धि को मापने के लिए डॉ० अरुण कुमार सिंह एव डॉ० श्रुति नारायण द्वारा निर्मित "संवेगात्मक बुद्धि मापनी" का प्रयोग किया गया है। इस मापनी का निर्माण चार विमाओं को लेकर किया गया है, जो निम्नवत् है—

1. संवेगात्मक अंतर्बोध
2. अभिप्रेरण अंतर्बोध
3. समानुभूति
4. संबंध प्रबंधन

संवेगात्मक बुद्धि मापनी का फलांकन:—

इस मापनी में कथनों के अंकन के लिए दो बिन्दु 'हाँ' या 'नहीं' में दिया गया है। सकारात्मक कथन के लिए हाँ पर 1 अंक एवं नहीं पर 0 अंक निर्धारित किये गये जबकि ऋणात्मक कथन के लिए हाँ पर 0 अंक एवं नहीं के लिए 1 अंक निर्धारित किये गये है।

(ii) **शैक्षिक उपलब्धि** :- छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि को मापने के लिए गणित उपलब्धि परीक्षण और साइंस उपलब्धि परीक्षण में प्राप्त अंकों का विश्लेषण किया गया। ये परीक्षण मानकीकृत हैं और कक्षा दसवीं में छात्रों की उपलब्धि का मूल्यांकन करने के लिए इन दोनों परीक्षणों के अंकों को जोड़ा गया था। इन परीक्षणों का वर्णन नीचे किया गया है:

(A) एल.एन. दुबे – गणित उपलब्धि परीक्षण :- इस परीक्षण में 30 आइटम शामिल हैं जिन्हें तीन क्षेत्रों में विभाजित किया गया है— (a) अंकगणित, (b) बीजगणित, (c) ज्यामिति। यह 13 से 15 वर्ष के छात्रों पर प्रशासित किया गया था।

अंकन—

प्रत्येक सही उत्तर पर एक अंक दिया गया है। कुल अंक 30 हैं। उत्तर कुंजी मैनुअल में दी गई है।

(B) आर.डी. सिंह साइंस उपलब्धि परीक्षण :- इस परीक्षण में भौतिकी में 42 आइटम और रसायन विज्ञान में 44 आइटम शामिल हैं और इसे हाई स्कूल के 1300 छात्रों पर प्रशासित किया गया था।

जेनरल क्लास रूम उपलब्धि परीक्षण का निर्माण ए०के० सिंह और ए० सेन गुप्ता द्वारा 2005 में किया गया। इस परीक्षण द्वारा समान्य उपलब्धि भिन्न-भिन्न विषय पर मापा जा सकता है। जैसे—अंग्रेजी, विज्ञान, समाजिक विज्ञान।

अंकन—

प्रत्येक सही उत्तर पर एक अंक दिया गया है। कुल अंक 86 हैं। उत्तर कुंजी मैनुअल में दी गई है।

12 ऑकड़ो का विश्लेषण की योजना

ऑकड़ो का विश्लेषण पियर्सन सहसंबंध गुणांक सांख्यिकी विधि के अनुप्रयोग द्वारा किया गया ।

13. शोध का महत्व

प्रस्तावित शोध भावनात्मक बुद्धि का शैक्षणिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभावों को दर्शाने का एक प्रयास है । प्रस्तुत शोध-शोध क्षेत्र के लिए अत्यंत लाभकारी होगा । नीति-निर्माण में यह भविष्य में बेहद काम आ सकता है । जिससे की बच्चों के प्रशिक्षण एवं समाज निर्माण में सहायक होगा ।

14 उपसंहार

शैक्षणिक सफलता को बढ़ावा देने में भावनात्मक बुद्धिमत्ता के महत्व को कम करके नहीं आंका जा सकता । जैसे-जैसे छात्र शैक्षिक परिदृश्य की जटिलताओं से निपटते हैं, उनकी भावनाओं को समझने और प्रबंधित करने की क्षमता, साथ ही सामाजिक संपर्कों को प्रभावी ढंग से नेविगेट करने की क्षमता, उनकी उपलब्धि के स्तर को निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है ।

भावनात्मक रूप से बुद्धिमान छात्र उच्च आत्म-जागरूकता प्रदर्शित करते हैं, जिससे वे अपनी भावनाओं को पहचानने और नियंत्रित करने में सक्षम होते हैं । यह आत्म-जागरूकता न केवल तनाव और दबाव को संभालने की उनकी क्षमता को बढ़ाती है बल्कि बेहतर निर्णय लेने और समस्या-समाधान कौशल में भी योगदान देती है । इसके अलावा, उच्च भावनात्मक बुद्धिमत्ता वाले छात्र साथियों और शिक्षकों के साथ सकारात्मक संबंध बनाने, सहयोगात्मक और सहायक सीखने के माहौल को बढ़ावा देने के लिए बेहतर ढंग से सुसज्जित होते हैं ।

भावनात्मक बुद्धिमत्ता का प्रभाव व्यक्तिगत कल्याण से परे तक फैला हुआ है यह पारस्परिक कौशल, सहानुभूति और संचार को सकारात्मक रूप से प्रभावित करता है – ये सभी शैक्षणिक सफलता के अभिन्न अंग हैं । जो छात्र सामाजिक गतिशीलता को प्रभावी ढंग से नेविगेट कर सकते हैं, उनके सार्थक सहयोगात्मक प्रयासों में संलग्न होने, कक्षा चर्चाओं में भाग लेने और सकारात्मक कक्षा वातावरण में योगदान करने की अधिक संभावना है ।

शैक्षणिक संस्थान ऐसे कार्यक्रमों को शामिल करके शैक्षणिक सफलता को आगे बढ़ा सकते हैं जो भावनात्मक बुद्धिमत्ता को बढ़ावा देते हैं, छात्रों को उनकी शैक्षणिक यात्रा के भावनात्मक और सामाजिक पहलुओं को नेविगेट करने के लिए आवश्यक उपकरण और कौशल प्रदान करते हैं । भावनात्मक बुद्धिमत्ता और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच संबंध को पहचानकर, हम छात्रों को न केवल अपनी पढ़ाई में उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए बल्कि अपने व्यक्तिगत और व्यावसायिक जीवन के विभिन्न पहलुओं में भी आगे बढ़ने के लिए सशक्त बनाते हैं । संक्षेप में, भावनात्मक बुद्धिमत्ता का पोषण छात्रों के समग्र विकास में एक निवेश है, जिससे यह सुनिश्चित होता है कि वे आगे आने वाली चुनौतियों और अवसरों के लिए अच्छी तरह से तैयार हैं । छात्रों की भलाई और सकारात्मक शैक्षिक परिणामों पर उचित ध्यान देने के लिए छात्रों के सांवेगिक

बुद्धि का अध्ययन करने की आवश्यकता है। आजकल शिक्षण-सीखने की प्रक्रिया के कारण होने वाले दबाव के कारण छात्रों में सांवेगिक बुद्धि संबंधी समस्याएं होने की संभावना अधिक होती है। चिकित्सा विज्ञान ने भी माना है कि किशोरों के जीवन में अत्यधिक दबाव उनके लिए शैक्षणिक और सामाजिक रूप से परेशानी पैदा कर रहा है। अध्ययन के निष्कर्षों से पता चला कि शैक्षणिक उपलब्धि और सांवेगिक बुद्धि के बीच सकारात्मक संबंध है। इसलिए, शिक्षकों, अभिभावकों और छात्रों को उनके सकारात्मक शैक्षणिक प्रदर्शन पर सांवेगिक बुद्धि के प्रभाव के बारे में सचेत रहना चाहिए।

REFERENCES

- [1] Abdullah Maria, Chang & Elias, Habiva. (2004). Emotional Intelligence and academic achievement among Malaysian secondary students. *Journal of Psychological Research*, 19(1), 3-8.
- [2] Afifi, M., Shehata, A., & Mahrousabdalaziz, E. (2016). Emotional intelligence, self- efficacy and academic performance among university students. *IOSR Journal of Nursing and Health Science (IOSR-JNHS)*, 5(3), 71-81. Retrieved from <https://www.iosrjournals.org/iosr-jnhs/papers/vol5-issue3/Version-2/J0503027481.pdf>
- [3] Chang Y-C and Tsai Y-T. (2022). The Effect of University Students' Emotional Intelligence, Learning Motivation and Self-Efficacy on Their Academic Achievement—Online English Courses. *Front. Psychol.* 13:818929. doi: 10.3389/fpsyg.2022.818929.
- [4] García-Martínez, I., Pérez-Navío, E., Pérez-Ferra, M., & Quijano-López, R. (2021). Relationship between Emotional Intelligence, Educational Achievement and Academic Stress of Pre-Service Teachers. *Behavioral sciences (Basel, Switzerland)*, 11(7), 95. <https://doi.org/10.3390/bs11070095>.
- [5] Hossein Fakorihajiyar & Alireza Homayouni & Hossein Daezadeh & Babak Hosseinzadeh, 2014. "Surveying relationship of Emotional Intelligence and mental health with achievement motivation in university students," *Proceedings of International Academic Conferences 0100077*, International Institute of Social and Economic Sciences. Retrieved from <https://ideas.repec.org/p/sek/iacpro/0100077.html>.
- [6] Jenaabadi, H., Shahidi, R., Elhamifar, A., & Khademi, H. (2015). Examine the relationship of emotional intelligence and creativity with academic achievement of second period high school students. *World Journal of Neuroscience*, 5(4), 275-281. doi:10.4236/wjns.2015.54025.
- [7] Joshi, A. (2010). Emotional intelligence and job satisfaction of teachers teaching in senior secondary schools. *Perspective in Psychological Researches*, 33(1), 211-214.
- [8] Joshi, A., & Thapliyal, P. (2014). Job Satisfaction of Secondary School Teachers in Relation to Their Emotional Intelligence. *Bhartiyam International Journal of Education & Research*, 3(3), 25-33, Retrieved from <http://www.gangainstituteofeducation.com/NewDocs/june-2014/Job-Satisfaction.pdf>.
- [9] Lanciano, T., & Curci, A. (2014). Incremental Validity of Emotional Intelligence Ability in Predicting Academic Achievement. *The American Journal of Psychology*, 127(4), 447-461. <https://doi.org/10.5406/amerjpsyc.127.4.0447>.
- [10] Zirak, M., & Ahmadian, E. (2015). The Relationship between Emotional Intelligence and Creative Thinking with Academic Achievement of Primary School Students of Fifth Grade. *Mediterranean Journal of Social Sciences*, MCSER Publishing, Rome-Italy, 6(1), 598-611. <https://www.richtmann.org/journal/index.php/mjss/article/view/5635>.